:: भूमिका ::

: भू मि का :

ऐसा माना जाता है कि साहित्य सृजन व्यक्ति का एक तरह से आत्मविद्रोह ही होता है। मनोविज्ञान इस बात को स्वीकार करता है कि विद्रोह मनुष्यकी मौलिक वृत्ति है। स्वभावानुसार मनुष्य में वह कमोबेश रुप में होती है। मनुष्य में होनेवाले विद्रोह का प्रकटीकरण कभी संयम से तो कभी पूरी आक्रमकता से व्यक्त होता आया है। मनुष्य का विद्रोह कभी अपने आप से होता है, तो कभी परिवेश एवं समाज से। हिन्दी कथा साहित्य के विकास में मनुष्य की इस मूल वृत्ति का चित्रण प्रारंभिक काल से ही दिखायी देता है। प्रेमचन्दपूर्व कथासाहित्य में विद्रोह क्षीण था। वह सुचकता से व्यक्त होता था। परंतु जैसे ही क्रान्ति, संघर्ष के स्वर समाज परिवर्तन के संदर्भ में बल पकडते गये कथाओं में विद्रोह का विस्तृतएवं सशक्त चित्रण होना स्वाभाविक ही माना जयेगा।

विशेषतःअक्तूबर क्रान्ति के बाद तथा व्दितीय विश्वयुध्द के बाद सामाजिक परिवर्तन की गति तेज हो गई और साहित्य में सामाजिक चित्रण केंद्रीय विषय बन गया। साम्यवाद औद्योगीकरण, वैज्ञानिकता जैसे कारणों से हमारी व्यक्ति और समाज की होनेवाली धारणाओं में बुनियादी परिवर्तन आये, जिसके फलस्वरुप कथासाहित्य के विषय का पटल आकाश से कम विस्तृत नहीं रहा। जहाँ तक आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य का सवाल है प्रेमचन्द तथा प्रेमचन्दोत्तर युग में विषय और आशय की दृष्टि से हिन्दी कथा साहित्य ने हर दिन सीमोल्लंघन की प्रचीति दी। डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल व्दारा सम्पादित 'कामकाजी महिलाओं की कहानियाँ' 'महानगर की कहानियाँ' 'मुस्लिम परिवेश की विशिष्ट कहानियाँ', 'शिक्षा जगत की कहानियाँ' 'वृद्धावस्था की कहानियाँ','बचपन की कहानियाँ' 'ग्राम्य जीवन की कहानियाँ''कार्यालय जीवन की कहानियाँ' 'साम्प्रदायिक सद्भाव की कहानियाँ' 'विकलांग जीवन की कहानियाँ' 'नारी उत्पीडन की कहानियाँ' 'विद्रोह की कहानियाँ' जैसे सम्पादित संकलनों में तथा इस प्रकार के अन्य नरेंद्र मोहन, बदीउज्जमा सम्पादित संग्रहो 'व्यवस्था विरोधी कहानियाँ' आदि ने इस बात का एहसास दिलाया कि हिन्दी में एक ही विचार सूत्र को लेकर अनेक कथाकार आये दिन कथा जाल बुनते रहे, जिनका अध्ययन काल की माँग महसूस हुयी।

जब एम्.फिल्. उपाधि हे हेतु 'विशेष विधा' के अध्ययन के अंतर्गत अनुसंधान के लिए अस्पर्श एवं सर्वथा नवीन विषय चयन पर मैं विचार करता रहा, तो मैंने अनुभव किया कि

हिन्दी में विद्रोह को केंद्र बनाकर लिखी कहानियों की चिकित्सा अपवाद स्वरुप हुयी है । तब जाकर मैंने डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल व्दारा सम्पादित 'विद्रोह की कहानियाँ' का अध्ययन करना तय किया । मेरा यह लघुशोध-प्रबंध इसदिशा में किये गये मेरे मौलिक चिंतन एवं विश्लेषण का प्रमाण है, जिसमें मैंने अनुसंधान की प्रविधी की सीमा में प्रस्तुत किया है ।

मेरे लघुशोध - प्रबंध के प्रथम अध्याय का शीर्षक है- 'विद्रोहः तात्पर्य, स्वरुप एवं परिभाषा' । इस अध्याय में मैंने विद्रोह का प्रयुक्त आशय स्पष्ट किया है। साथ-ही-साथ विद्रोह से मुझे अभिप्रेत भाव तथा शब्दचित्र को परिभाषित किया है । ऐसा करते समय विद्रोह शब्द के विभिन्न भाषाओं में प्रचलित अर्थों के संदर्भ में अनुसंधान से संदर्भित विद्रोह को व्याख्यायित किया है। जिससे स्पष्ट होता है कि किसी व्यक्ति या व्यक्तिसमूह के व्दारा किसी सत्ता, व्यवस्था, परम्परा आदि को अस्वीकाराकर उसे खत्म करने का प्रयास विद्रोह है । उसके अनेक रुप एवं प्रकार होते है, जिसको स्वरुप के अंतर्गत स्पष्ट किया है । उसकी व्यापकता को रेखांकित किया है । और उसी व्याख्या के परिप्रेक्ष्य में विद्रोह की कहानियों का अनुशीलन अभिप्रेत है ।

दूसरे अध्याय में हिन्दीकहानी के प्रारंभएवंविकास का आलेख खिंचा गया है । हिन्दी कहानी के जन्मसे लेकर आज तक विकास यात्रा में विद्रोह केबदलते स्वरूपका आलेख खिंचन के उद्देश्य को समर्पित इस अध्यायमें प्रेमचन्दपूर्व कहानियों मे विद्रोह के सांकेतिक रूप की जैसी चर्चा वैसे वर्तमान युग में होनेवाली विद्रोह की सर्वव्यापी चर्चा भी है । इससे स्पष्ट होता है कि समाज जीवन में आये परिवर्तन के फलस्वरूप विद्रोह का न सिर्फ स्वरूप बदला बल्कि उसके प्रकटीकरण में भी परिवर्तन आया ।

तीसरे अध्याय में अनुसंधान का लक्ष्य बनाया गया गिरिराजशरण अग्रवाल व्दारा सम्पादित 'विद्रोह की कहानियाँ' में विद्रोह का स्वरूपगत अध्ययन किया गया है । इस दृष्टि से आरंभिक दो अध्याय मेरे अनुसंधान में पीठीका का काम करते है। प्रारंभिक दो अध्यायों में मैने विद्रोह की जो सैध्दान्तिक चर्चा की है उसके परिपार्श्व में इस अध्याय में उपयोजित किया है ।

चौथा अध्याय 'विद्रोह की कहानियाँ ' के कलात्मक अनुशीलन को प्रस्तुत करता है। इसमें मैंने कहानी की शिल्प विधि के आधार डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल व्दारा सम्पादित 'विद्रोह की कहानियाँ' में कहानियों का शिल्प एवं 'शैलीगत अध्ययन प्रस्तुत किया है । साथ - ही - साथ इसमें 'विद्रोह कीकहानियाँ' की विशेषताएँ भी रेखांकित की है ।

पाँचवा एवं अंतिमअध्याय उपसंहार का है, जिसके अंतर्गत मैंने अपने अनुसंधान के लक्ष्य से लेकर सिध्दी तक के सारे प्रयासो एवं आयामों का विहंगमावलोकन कर अपने अनुसंधान की उपलब्धियों को बडे संयम शब्दों में प्रस्तुत किया है । एक दृष्टि से यह अध्याय मेरे

अनुसंधान का निष्कर्ष ही है। इससे स्पष्ट होता है कि किसी समय मात्र संकेत से प्रकट हुआ विद्रोह आज अपने बहुआयामी रूप को धारण कर समाज और व्यक्ति स्तर के विद्रोह के रूप में परिस्थितियों के बदलते नयी करवटें लेता दृष्टिगोचर होता हैं। यह भी स्पष्ट होता है कि परिस्थितियाँ जैसी उग्र हो जाती वैसे विद्रोह व्यापक और तीव्र हो उठता है।

अंत में परिशिष्ट के अन्तर्गत प्रयुक्त संदर्भ-ग्रंथों की सूची प्रस्तुत की है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की पूर्ति में शोध-निर्देशक डॉ. सुनीलकुमार लवटे जी का उचित निर्देशन एवं सहयोग मिला। मैं उनका ऋणि हूँ।

साथ-ही-साथ डॉ. वसंत मोरे, डॉ. पी.एस. पाटील, डॉ.अर्जुन चव्हाण, डॉ. इरेश स्वामी, सौ. माधवी जाधव के आत्मीय सहयोग एवं योग्य निर्देशन से ही मेरा यह छोटा-सा शोध-कार्य संपन्न हुआ। अतः उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

इस कार्य को सफल बनाने में जिन विद्वानों का एवं स्नेहियों का प्रोत्साहन एवं सहकार्य मिला उन सभी का आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

बॅ. खर्डेकर ग्रंथालय के ग्रंथपाल तथा कर्मचारी, महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर के ग्रंथपाल इनका भी मैं आभारी हूँ।

इन विद्वतजनों के साथ-साथ मेरे पूज्य माता-पिताजी, भाई तथा भोसले परिवार का कृपाशीर्वाद सदैव रहने से ही मैं इस कार्य में सफल हो चूका हूँ। अतः मैं उनका ऋणि हूँ।

परोक्ष तथा अपरोक्ष रूप में जिन हितचिंतकों का मुझे हमेशा सहयोग मिलता रहा उन सभी का मैं एहसासमन्द हूँ।

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध को टंकित करने का कार्य अजित टाईपरायटिंग अॅन्ड झेरॉक्स कॉपीअर्स, ६३१, सी शिवाजी रोड, बिंदू चौक, कोल्हापूर इन्होने कम समय में पूरा किया है। अतः मैं उनका भी आभारी हूँ।

स्थान : कोल्हापुर

तिथि : / /१९९५

Patil D.

श्री दिलीप जनार्दन पाटील

शोध-छात्र